मॉरिशस की संस्कृति और संवेदना : एक विहंगम दृष्टि

(‘अंतहीन आकाश’ एवं ‘कहानियाँ सुनाती यात्राएँ’ के विशेष संदर्भ में)

अशोक कुमार सखवार

पी-एच.डी. शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
साँची बौद्ध - भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय
बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश

सारांश

भारतीय वासियों को अंग्रेजों के द्वारा लगभग सन् 1935 से सन् 1920 तक बेहतर जीवन-यापन का लोभ लालच देकर मॉरिशस लाया गया। मॉरिशस में उनके साथ वर्षों तक अमानवीय व्यवहार किया गया। भारत से मॉरिशस जब वे गए तब उनके पास अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए सिर्फ भाषा, संस्कृति, लोककथाएँ और लोकगीत की कुछ ध्वनियाँ थी। प्रस्तुत शोध-पत्र में उन्होंने अपनी मातृभाषा और संस्कृति-सभ्यता को विपरीत परिस्थिति में संरक्षित रख कर तथा उसी से अपने दुःख-दर्द को सहने एवं संगठित रहने की प्रेरणा कैसे प्राप्त की? का संवेदनात्मक वर्णन है। मॉरिशस में भारतीय मूलनिवासी अपनी मेहनत और सूजबूज के आधार पर समृद्धि एवं समानजनक जीवन-यापन कर रहे हैं उसमें उनकी संस्कृति और संगठन शक्ति का बहुत बड़ा योगदान है। मॉरिशस में विभिन्न धर्मों तथा संस्कृतियों के मानने वाले लोग रहते हैं। जिसमें बहुसंख्यक आवादी हिन्दुओं की है। वहाँ सभी संप्रदायों और धर्मों के लोग एक-दूसरे की स्वतंत्रता का ख्याल रखते हैं तथा एक-दूसरे के सार्वजनिक त्योहारों एवं उत्सवों में भी शामिल होते हैं।

बीज-शब्द: मॉरिशस, संस्कृति, त्योहार, संवेदना, गिरमिटिया, मेनतकश, मजदूर, किसान, भारतवासी।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध-पत्र में दो यात्रा-साहित्यों अंतहीन आकाश और कहानियाँ सुनाती यात्राएँ को लिया गया। ‘अंतहीन आकाश’ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कृत यात्रा-साहित्य है तथा ‘कहानियाँ सुनाती यात्राएँ’ कुसुम खेमानी कृत यात्रा-साहित्य है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक हैं। वे साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर सन् 2013 से सन् 2017 तक रहे हैं। गोरखपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका ‘दस्तावेज’ के संस्थापक एवं संपादक रहे हैं। वे सन् 2001 में गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध-पत्र एवं पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, भारतीय भाषा परिषद आदि के

द्वारा उनके लेखन कार्य के लिए सम्मानित भी किया गया है।

कुसुम खेमानी लम्बे समय से लेखन कार्य से जुड़ी हुई हैं, इन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध-पत्र एवं पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। वे अनेक समाजसेवी, साहित्यिक एवं कला संस्कृति से संबंधित सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के पदों पर रही हैं। खेमानी जी ने ‘वागर्थ’ पत्रिका का संपादन कार्य भी किया है। दूरदर्शन एवं ऑल इण्डिया रेडियो के कार्यक्रमों में लेखन कार्य और सहभागिता भी की है। वे यात्राओं में विशेष रुचि रखती हैं।

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में कभी न कभी यात्रा जरूर करता है और उन यात्राओं के दौरान हुए अनुभवों

को वह हमेशा संजो कर रखता है। चाहे वह यादें अच्छी हों या बुरी। सृजनशील व्यक्ति जब अपने यात्रा अनुभूतियों में संवेदना का मिश्रण कर लिपिबद्ध करता है, तो यात्रा साहित्य का सृजन होता है। यात्रा और मनुष्य का आपस में घनिष्ठ संबंध है। प्राचीन काल में मनुष्य अपने जीवन यापन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था। जब मनुष्य ने खेती करना शुरू नहीं किया था, तो वह खाने की तलाश में दूर-दूर तक यात्राएँ कर खाने का प्रबंध करता होगा। इन यात्राओं से अनेक अनुभावों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा। इन्हीं कठिनायों से बचने और सुख सुविधाओं के साधन जुटाने के लिए नए-नए अविष्कार करता चला गया। राहुल सांकृत्यायन अपनी पुस्तक 'घुमक्कड़ शास्त्र' में लिखते हैं, "घुमक्कड़ क्यों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है? इसीलिए कि उसी ने आज की दुनिया को बनाया है। यदि आदिम-पुरुष एक जगह नदी या तालाब के किनारे गर्म मुल्क में पड़े रहते, तो वह दुनिया को आगे नहीं ले जा सकते थे...अगर घुमक्कड़ों के काफिले न आते-जाते, सुस्त मानव जातियाँ सो जातीं तो पशु से ऊपर न उठ पातीं।"¹ आज भी मनुष्य अपने बेहतर जीवन यापन के लिए देश-विदेशों तक यात्राएँ करता है।

मॉरिशस की भौगोलिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

भारत के पश्चिम में मॉरिशस 1865 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। जिसमें से 330 किलोमीटर लुभावनी तटीय क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जिस ज्वालामुखी से मॉरिशस का निर्माण हुआ उसे आज भी वहाँ के लोग बड़ी श्रद्धा से देखते हैं। कई वर्षों तक यह द्वीप जंगलो से आच्छादित एक निर्जन द्वीप रहा। इस द्वीप पर पहली बार पुर्तगालियों ने गोआ आदि जाते हुए रास्ते के पड़ाव के रूप में प्रयोग करते रहे। मॉरिशस पर अधिपत्य स्थापित करने के लिए पश्चिमी देशों में दौर-सा चल पड़ा।

सबसे पहले मॉरिशस में डचों ने राज्य किया इसके बाद फ्रांसीसियों ने यहाँ राज्य किया। पेरिस संधि के बाद मॉरिशस सन् 1814 से अंग्रेजों के अधिपत्य में आ गया। यहाँ की संपदा को लूटने के लिए अंग्रेजों ने भारत में नरतांडव शुरू कर दिया। भारतियों में सर्वाधिक विहारी किसान थे, जो पहले से ही सूखे की मार से गुजर रहा था। अंग्रेजों के दलालों ने उनकी इसी मजबूरी का

फायदा उठाया। भारतीयों से भरे जहाज मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, टोबैगो, डरबन, केपटाउन और जोहान्सबर्ग तक इन किसानों, मजदूरों को लाया गया। वर्तमान में भारतीय मूल के व्यक्तियों का वर्चस्व मॉरिशस में दिखता है। इस संदर्भ में कुसुम खेमानी अपने यात्रा-साहित्य 'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' में लिखती हैं – "अंग्रेजों के 'सूरज न डूबने वाले साम्राज्य' के एक कोने में स्थित 'भारत' को कड़ी नजर से घूरते हुए अपने 'दलालों' को हुक्म दिया- "जाओ! धोखे से तुरंत उस देश के हट्टे-कट्टे जवानों को यहाँ बहकाकर ले आओ।" रक्षक ही भक्षक बन जाएँ तो गुलामी प्रथा का कानून क्या करें? अभी भारत का 'बिहारी' सूखे की चपेट से गुजरा ही था कि अंग्रेजों के दलालों ने उन्हें रोजगार और समृद्धि के सब्जबाग दिखाए।...यहाँ का भोला-भला मेहनतकश किसान उनके चंगुल में फँसता चला गया।"²

भारत का मेहनतकश मजदूर किसान अंग्रेजों के दलालों की इन्द्रधनुषी रंगों भरी बातें कि तुम जल्दी ही अमीर हो जाओगे उस जमीन में पहाड़ों के नीचे हीरे निकलते हैं। तुम्हारे लिए ऋद्धि-सिद्धि से परिपूर्ण स्थान आपका की प्रतीक्षा कर रहा है। यहाँ की गरीबी, बेबसी, गुलामी से दूर खुशहाली तुम्हारा बेसब्री से इन्तजार कर रही है। जब आप अपने घर वापस लौटोगे तो पैसों से भरे आपके पास संदूक होंगे। अंग्रेजों के दलले इस प्रकार से उन मेहनतकशों को लालच देकर अपने चंगुल में फसा लेते हैं। मॉरिशस की जेटी पर भारतीय गुलामों को वहाँ लाया गया। उन्हें बेड़ियों से बाँधकर रखा गया उनके बच्चे और उनकी पत्नियों को अलग-अलग रखा गया। उनकी आँखें खेतों को ढूँढ़ रही थी ताकि उनके बच्चों के पेट भरने के लिए अनाज मिल सके। मूसलाधार वर्षा और उनके यातना भरे कोड़ों ने उन्हें अधमरा-सा कर दिया। गन्नों के खेतों में उन्हें खूटियों से बाँध दिया गया। उनकी पत्नियों को उनसे दूर आसपास के खेतों में काम करने के लिए रखा गया। खुले आसमान के तले तेज धूप बारिश चौबीसों घंटों खटने के लिए छोड़ दिया गया। उनकी अनुपस्थिति में उनकी पत्नियों से बलात्कार किए गए। जहाँ पर भारतीय मजदूरों को रखा गया उस स्थान को जेटी कहते हैं। जिसे एक स्मारक की तरह उस 'कुली जेटी' को सुरक्षित रखा गया है। लेखिका कुलजेटी के सन्दर्भ में लिखती हैं, "आज भी मॉरिशस के जवान उस 'कुल जेटी' को साष्टांग दण्डवत करते हैं जहाँ इनके पुरखों का खून बहा था।"³

मॉरिशस की सांस्कृतिक और संवेदनात्मक दृष्टि

अंग्रेजों से पूर्व यहाँ फ्रेंच रहते थे। जब पेरिस संधि हुई तब उन्होंने अंग्रेजों से उनकी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने का अनुबंध किया था। यहाँ कुछ फ्रांसिसी भी निवास करते हैं। डच और फेंच काल में यहाँ अफ्रीकी हब्शी गुलाम कार्य करने के लिए लाए गए थे। जिनके साथ गोरे मालिक बड़ी बेरहमी से बरताव करते थे। जब सन् 1835 में गुलामी की प्रथा समाप्त हो गई तब अंग्रेजों ने बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मजदूरों को अनुबंध के आधार पर लाना शुरू कर दिया यह जो 'गिरमिटिया' शब्द है। वह अनुबंध (एग्रीमेंट) का बिगड़ा ही रूप है, "1835 ई. में गुलामी की यह प्रथा समाप्त हुई और अंग्रेजों ने भारी संख्या में भारतीय मजदूरों को अनुबंध (एग्रीमेंट) के आधार पर यहाँ लाना शुरू किया। बहुप्रचलित गिरमिटिया शब्द 'एग्रीमेंट' का ही बिगड़ा हुआ रूप है।"⁴

भारतीय मूल के निवासियों ने अपनी मेनत और सूजबूज से अपनी आर्थिक स्थिति को सुधर लिया और अपनी भारतीय संस्कृति-सभ्यता और भाषा को अपनाए रखा जिसने उन्हें मजबूती प्रदान की और वे एकजुट होकर रह पाए। कहते हैं कि दुःख और भय नैसर्गिक शत्रुओं को भी मित्र बनाने का कार्य करता है। सहदुःखभोगियों के बीच गहरी आत्मीयता स्थापित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है यह नैसर्गिक है। मॉरिशस में भारतवंशियों के लिए यह रिश्ता सबसे प्रगाढ़ और संयुक्त परिवार का अंग बन गया। लेखक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी यात्रा-साहित्य 'अंतहीन आकाश' में लिखते हैं, "वह एक अजनबी देश की अँधेरी रात थी। गिरमिटियों के पास अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपनी भाषा और अपने देश की सांस्कृतिक स्मृति के अलावा और कुछ नहीं था। 'रामचरितमानस' और 'हनुमानचालीसा' की कुछ पोथियाँ थीं, कुछ मिथक थे, कुछ सामाजिक रीति-रिवाज और धार्मिक कर्मकांड थे, कुछ लोककथाएँ थीं।"⁵

उन भारतीय मूलनिवासियों के पास जो कुछ था। उसे अक्षुण्ण बनाए रखने की उन्होंने भरपूर कोशिश की। उनकी अपनी भारतीय संस्कृति और भाषा ने उनके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ढाल की तरह कार्य किया। मॉरिशस में गिरमिटिया मजदूरों का सन् 1834 से सन् 1920 तक आना-जाना जारी रहा। भोजपुरी भाषा बोलने वाले भारतीय मजदूर अपने साथ भोजपुरी भाषा

का समृद्ध लोकसाहित्य और लोकसंगीत भी अपनी स्मृति में लेकर आए थे। इस काव्य और संगीत ने उनकी वेबसी, लाचारी और पसीने को अपने जादुई स्पर्श से पोंछा और उन्हें ऐसी अद्भुत शक्ति दी जिससे अपने अस्तित्व की रक्षा कर सके। भारतीय मूल के निवासियों ने अपनी भाषा को रक्षात्मक दीवार बनाया। जिसने उन्हें एकता के सूत्र में बाँधे रखा एवं संगठित किया। उन्हें दुःख सहने की शक्ति एवं संघर्ष करने के लिए प्रेरित भी किया। इसी भाषा में भारतीय मूलनिवासी अपनी दुःख वेदना को साझा कर सकते थे एवं महसूस कर सकते थे। मॉरिशस के भोजपुरीभाषी भारतीयों की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जिसके कारण वे अपने घरों से बहुत दूर भिन्न देश और भिन्न संस्कृति में जाकर भी न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकने में समर्थ हुए बल्कि वे आज बेहतर खुशहाल जीवन जी रहे हैं। भारतीय भाषा एवं संस्कृति ने गिरमिटियों को विपरीत परिस्थिति में भी धीरज, विनम्रता, निष्ठा, कर्मठता से जीवन-यापन करने की शक्ति प्रदान की। मॉरिशस में भारतीय आज अत्यंत खुशहाल और समृद्ध स्थिति में हैं, इसका सबसे बड़ा योगदान उनकी अपनी भाषा और संस्कृति थी। भोजपुरी भाषा मॉरिशस में बहुसंख्यक लोगों की भाषा है। लेकिन जनसंपर्क की भाषा के रूप में क्रियोली प्रयोग में लाई जाती है।

मॉरिशस में आज भी भोजपुरी भाषी हिन्दुओं के मांगलिक कार्यक्रम भोजपुरी भाषा में ही संपन्न होते हैं। यहाँ के भारतीय मूल के निवासी धार्मिक कर्मकांड के साथ बड़ी गहराई से जुड़े हुए हैं। कुछ व्यक्ति यहाँ भोजपुरी के अलावा दूसरी भाषा तक नहीं जानते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ एकादशी, जीउतिया आदि व्रत रखती हैं। कार्तिक स्नान करती हैं। मांगलिक कार्यक्रमों के अवसरों पर जैसे विवाह, हल्दी, तिलक, द्वारपूजा, परछावान, कन्यादान आदि अवसरों पर भोजपुरी लोकगीत गाए जाते हैं। जिसका सभी लोग आनन्द लेकर सुनते हैं। मॉरिशस में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई धर्म को मानने वाले तीन प्रमुख धर्मावलंबी निवास करते हैं। विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करने के बावजूद यहाँ संस्कृतियों का अद्भुत सामंजस्य देखा जा सकता है। वे एक-दूसरे की धार्मिक स्वतंत्रता का ख्याल रखते हैं। यहाँ के निवासी एक-दूसरे के सार्वजनिक त्योहारों में शामिल भी होते हैं। संस्कृति और यात्रा के संबंध के बारे में डॉ. संध्या शर्मा लिखती हैं – "देश-देशांतर की यात्रा करते हुए यायावर जहाँ एक ओर

देश की संस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाज, स्थितियों-धर्म दर्शन कला आदि को प्रचारित और प्रसारित करता है, वहाँ दूसरी ओर वह विभिन्न देशों की संस्कृतियों की प्रस्तुति भी अपनी यात्रा-कृतियों में करता है जिससे न केवल सांस्कृतिक समन्वय होता है, अपितु संस्कृतियों का विस्तार भी होता है।⁶ संस्कृति हमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारे पूर्वजों से प्राप्त होती है जिसमें कि समुदाय के अतीत की पहचान छुपी हुई होती है। व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं लेकिन अपनी संस्कृति से अलग होना बहुत कठिन होता है। भारत से हिन्दू परिवार मॉरिशस चले गए लेकिन अपनी संस्कृति को नहीं भूल पाए उन्होंने धार्मिक प्रतीकों को वहाँ की परिस्थिति के अनुसार तथा भारत की विशेषता के अनुसार गढ़ लिया है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी अपने यात्रा-साहित्य 'अंतहीन आकाश' में आपसी सामरस्य के बारे में लिखते हैं – “इतिहास गवाह है कि यहाँ कभी भी...किसी भी क्षण...धर्म को लेकर हंगामा नहीं हुआ। ‘शिवरात्रि’ के पर्व पर ‘काँवडिये’ कन्धों पर काँवड रख ‘गंगा तालाब’ जाते हैं उनके क्रिश्चियन और मुसलमान मित्र साथ-साथ चलते दिखते हैं। दिवाली, ईद, उगादी (तेलगु पर्व) गणेश चतुर्थी आदि के समानांतर ही ईसाइयों का ‘फादर लवाल’ एवं फरवरी में चीनियों का नववर्ष ‘वसंत उत्सव’ के नाम से खूब धूमधाम से मनाये जाते हैं।⁷ मॉरिशस के गाँवों में बहुसंस्कृतियों का सामजस्य देखा जा सकता है। यहाँ पर जतिप्रथा टूट चुकी है। सामाजिक संबंधों में इसका असर दिकाई नहीं पड़ता है। विवाह संबंधों में जाति नहीं देखी जाती। पौरोहित्य का कर्म कोई भी कर सकता है। विभिन्न संस्कृतियों के निवास करने के कारण यहाँ रहन-सहन, खान-पान तथा वेश-भूषा में अंतर देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

अंतहीन आकाश तथा कहानियाँ सुनाती यात्राएँ, इन दो यात्रा-साहित्य के मध्यम से भारत से मॉरिशस में अंग्रेजों के द्वारा भारतीय मूल के निवासियों को बेहतर जीवन-यापन का लोभ लालच देकर लाया गया। मॉरिशस में उनके साथ वर्षों तक अमानवीय व्यवहार किया गया। अजनबी देश में गिरमिटियों के पास अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सिर्फ भाषा, संस्कृति, लोककथाएँ और लोकगीत की कुछ ध्वनियाँ थी। लेकिन उन्होंने अपनी

मातृभाषा और संस्कृति-सभ्यता को विपरीत परिस्थिति में संरक्षित रखा तथा उसी ने उन्हें दुःख-दर्द को सहने एवं संगठित रहने की प्रेरणा दी। आज वे अपनी मेहनत और सूजबूज के आधार पर समृद्धि एवं समानजनक जीवन-यापन कर रहे हैं। मॉरिशस में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तीन प्रमुख धर्म को मानने वाले तथा विभिन्न संस्कृतियों के लोग रहते हैं। जिसमें बहुसंख्यक आवादी हिन्दुओं की है। वहाँ सभी संप्रदायों और धर्मों के लोग एक-दूसरे की स्वतंत्रता का ख्याल रखते हैं तथा एक-दूसरे के सार्वजनिक त्योहारों एवं उत्सवों में भी शामिल होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 सांकृत्यायन).राहुल,2015.(घुमक्कड़शास्त्र . इलाहाबाद.किताब महल : पृ .8
- 2 खेमानी).कुसुम,2012.(कहानियाँ सुनाती यात्राएँ. नई दिल्ली .राधाकृष्ण प्रकाशन : पृ .99
- 3 वही, पृ .100
- 4 तिवारी).विश्वनाथ प्रसाद,2005.(नई दिल्ली : .किताबघर प्रकाशन पृ .26
- 5 वही, पृ .27
- 6 शर्मा),डॉ.(. संध्या).2015.(हिन्दी यात्रासाहित्य- की सांस्कृतिक प्रष्ठभूमि .पृ .बुक पब्लिकेशन : लखनऊ .20
- 7 खेमानी).कुसुम,2012.(कहानियाँ सुनाती यात्राएँनई . .राधाकृष्ण प्रकाशन : दिल्लीपृ .101